हिंदी आलोचना (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

आलोचना साहित्य का विकास आधुनिक युग के गद्य विधाओं के सृजन के साथ ही हो गया था परन्तु इस आलोचना के छोटे पौधों के एक बड़ा वृक्ष का स्वरूप देने वाले आचार्य शुक्ल पहले आलोचक हैं जिन्होंने अपनी सूझबूझ और परिश्रम से इसे एक नया आयाम दिया। आचार्य शुक्ल के आलोचनात्मक विशेषता निम्न बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं —

1. रसवादी आलोचक
2. आलोचना छोटा पौधा से ...
3. पाश्चात्य एवं भारतीय काव्य...
4. बुद्धि एवं ज्ञान का संतुलित सम...
5. संयम आदर्श एवं नैतिकतावाद...
6. सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक आलो...
7. कविता का लक्ष्य मनुष्य
8. सूक्ष्म दृष्टि —

निष्कर्ष :

कुल मिलाकर इनकी आलोचनात्मक काव्यकृति निम्न हैं — 1. चिंतामणि
2. त्रिवेणी
3. रसमीमांसा

इन आलोचनात्मक काव्य कृतियों में शुक्ल जी आलोचना के नए प्रतिमान की जो प्रतिष्ठापन किये हैं वह एक आदर्श के रूप में बड़े कवि महोदय के सामने प्रकट हुआ है।

कमलेश कुमार